CCI NG 3.7 Product: LucknowMasalamixBS PubDate: 15-02-2026 Zone: Lucknow Edition: 1 Page: LTMMFP User: cci Time: 02-14-2026 21:02 Color:

डॉन 3 के लिए मुझे नहीं किया गया अप्रोचः रितिक

Page 5

नवभारत टाइम्स NBT
I ADVERTORIAL ENTERTAINMENT PROMOTIONAL FEATURE
Lucknow Times OF INDIA masalamix
नवभारत टाइम्स, कानपुर (कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रसारित), रविवार, 15 फरवरी 2026

शेफाली शाह ने बयां किया प्यार का अर्थ

Page 5

मरीन ड्राइव पर भुवन को बैठा वामिका ने चलाई ऑटो

LTMM EXCLUSIVE

यश नीशिल

लखनऊ-कानपुर इन दिनों सिर्फ शूटिंग लोकेशन नहीं बल्कि सितारों की हलचल से भरे सेट बन चुके हैं। शनिवार को ऐक्टर व यूट्यूबर भुवन बाम, वामिका गब्बी के साथ ऑटो में मरीन ड्राइव पर नजर आए। हाल ही में कानपुर की सड़कों पर भी वामिका ऑटो से भागते हुए तीन लड़कों का पीछा करती दिखी थीं, तो वहीं भुवन भी उनके साथ पीछे वाली सीट पर बैठे हुए थे। इससे पहले, लखनऊ के मॉल में मनोज पाहवा, गीता अग्रवाल शर्मा, भुवन बाम एक साथ खिलखिलाते दिखे थे। वहीं, शहर में टिग्मांशु भट्टाचार्य स्टारर वेब सीरीज की शूटिंग भी शुरू हो गई है, जबकि इन दिनों शहर में संचिता बसु और धवल कुमार की मौजूदगी से भी सेट गुलजार है। इस तरह लखनऊ-कानपुर एक बार फिर शूटिंग का हॉटस्पॉट बनते दिख रहे हैं।

फैंस चोरी-छिपे फोटो-विडियो लेते रहे

वामिका गब्बी ऑटो चला रही थीं, जिस पर दिल्ली की नंबर प्लेट लगी हुई है। उन्होंने पीले रंग का सूट और गुलाबी दुपट्टा कैरी कर रखा था। स्कूटी सवार तीन लड़के उन्हें छेड़कर भाग निकलते हैं और बाद में वामिका ऑटो से उनका पीछा करती हैं और फिर उनकी पिटाई शुरू कर देती हैं। यह नजारा भुवन बाम भी देख रहे थे, जो कुछ देर पहले उनके साथ ऑटो में बैठे हुए थे। दरअसल, यह सब उनकी फिल्म कुकू की कुंडली का सीक्वेंस था, जिसे गुरुवार और शुक्रवार को कानपुर की सड़कों पर फिल्माया गया। आउटडोर शूट होने की वजह से फैंस भी स्टार्स को देखकर चोरी-छिपे कैमरे से फोटोज और विडियोज लेते रहे। बता दें कि भुवन पहले तीन दिन लखनऊ में शूटिंग कर चुके हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर करके भी शूटिंग शुरू होने की जानकारी फैंस के साथ साझा की थी। वहीं, वामिका ने गुरुवार से ही कानपुर में अपना शूटिंग शेड्यूल शुरू किया था।

कानपुर वाले सीक्वेंस को जोड़ा लखनऊ में

भुवन बाम और वामिका गब्बी शनिवार को गोमतीनगर स्थित मरीन ड्राइव पर एकसाथ दिखाई दिए। भुवन यहां लाल रंग की टी-शर्ट पहने हुए थे और वामिका ने पीला सूट और गुलाबी दुपट्टा कैरी कर रखा था। इस दौरान वामिका हाथ में स्क्रिप्ट पकड़े नजर आ रही हैं। यहां भी वामिका ऑटो चला रही हैं और भुवन बाम पीछे वाली सीट पर बैठे हुए हैं। सूत्रों की मानें तो दोनों कलाकारों ने यहां पर जो सीक्वेंस शूट किया है, उसे कानपुर वाले सीन के साथ में जोड़ा जाएगा। वहीं, भुवन बाम ने लखनऊ और कानपुर में अपने फैंस के साथ कई सारी फोटोज भी खिंचवाईं थीं।

CONTINUED ON ▸ 3

लंदन फैशन वीक के नए सीजन में शामिल होंगी कृति

अभिनेत्री कृति सेनन फैशन के मामले में किसी से पीछे नहीं हैं, इसलिए वह तमाम बड़े फैशन इवेंट्स में नजर आती हैं। ताजा जानकारी के अनुसार, अब कृति लंदन फैशन वीक के अगले सीजन में शिरकत करने वाली हैं। फैशन के लिहाज से ये उनके लिए बड़ा प्लेटफॉर्म है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, कृति इस साल एक फैशन कंपनी के लिए लंदन फैशन वीक में शामिल होंगी। इंडस्ट्री के जानकार बताते हैं कि उन्होंने अपने फैशन से हर किसी को प्रभावित किया है इसलिए लंदन फैशन वीक में उनका शिरकत करना एक बड़ी बात है। हालांकि वह इवेंट के किस कार्यक्रम में शामिल होंगी इस बारे में कोई जानकारी सामने नहीं आई है।

ग्लोबल स्टेज पर पहले भी दिखीं हैं

हालांकि ये पहला मौका नहीं है जब कोई ग्लोबल इवेंट का हिस्सा बन रही हैं, इससे पहले वह वर्ल्ड हेल्थ समिट में भी शामिल हो चुकी हैं, जहां उन्होंने महिलाओं के स्वास्थ्य और लैंगिक समानता पर अपने विचार व्यक्त किए थे। गौरतलब है कि कृति सोशल मीडिया पर अपने फैशन से जुड़ी तमाम फोटोज शेयर करती रहती हैं।

इससे पहले कृति सेनन वर्ल्ड हेल्थ समिट में भी हिस्सा ले चुकी हैं

नरगिस फाखरी ने कराई स्टेम सेल थेरेपी

नरगिस फाखरी हाल ही में एक गंभीर चोट से गुजरी थीं। अब उन्होंने सोशल मीडिया पर एक विडियो पोस्ट करके उन्होंने चोट से उबरने के अपने सफर पर बात की है। नरगिस ने बताया है कि घुटने की एक पुरानी चोट के इलाज के लिए उन्होंने स्टेम सेल थेरेपी करवाई है।

नरगिस ने कहा, 'मैंने अपने दोनों घुटनों के लिए बोन मैरो स्टेम सेल थेरेपी करवाई थी। डांस करने की वजह से उनमें मेनिस्कस टियर हो गए थे। मुझे ढाई महीने हो गए हैं और मैं बहुत अच्छा महसूस कर रही हूं। मैं सच में कह सकती हूं कि आज मैं कम से कम 75 से 80% बेहतर महसूस कर रही हूं।' नरगिस ने बताया कि इससे पहले भी उन्हें घुटनों की समस्या हुई थी। वह कहती हैं, 'लगभग 10 साल पहले भी मेरे घुटनों में भी यही दिक्कत थी। दोनों घुटनों में मेनिस्कस फट गया था। मुझे सर्जरी कराने की सलाह दी गई थी, लेकिन मैं सर्जरी नहीं करवाना चाहती थी। इसके बजाय मैंने फिजियो का रास्ता अपनाया और अपनी मसल्स को मजबूत किया लेकिन इसमें मुझे बहुत लंबा समय लगा। सच कहूं तो इसमें मुझे शायद सालों लग गए।'

डांस करने की वजह से मुझे घुटनों में समस्या का सामना करना पड़ा, जिसकी वजह से मैंने बोन मैरो स्टेम सेल थेरेपी कराई। मुझे ढाई महीने हो गए हैं और मैं बहुत अच्छा महसूस कर रही हूं।

'कह दिया था कि नहीं चला तो ऑटो चला लूंगा'

मैंने नौ साल थिएटर को दिए। पैसे नहीं थे। यह मेरी पहली फिल्म है। ऐसे में भरोसा ही था, जिसकी वजह से टिके रहे। मैं हमेशा सोचता था कि परिणाम चाहे जो हो, मुझे आगे बढ़ना है। नई समस्याएं फेस करनी हैं।

करण जोशी

Vartul.Awasthi@timesofindia.com

नौ साल का थिएटर और अनिश्चित इंडस्ट्री का डर, इन्हीं के बीच खड़ा है उभरते गुजराती कलाकार करण जोशी का सफर। लखनऊ में हुई उनसे यह बातचीत अचानक मिली कामयाबी से ज्यादा, उस भरोसे की कहानी है, जो तब भी नहीं टूटा था, जब जेब खाली थी और रास्ता धुंधला। अपने क्राफ्ट, जिद और ईमानदारी के दम पर करण जिस मुकाम तक पहुंचे हैं, उसकी झलक उनकी फिल्म लालोः श्रीकृष्ण सदा सहाय में साफ तौर पर दिखती है।

किरदार ने हार ना मानना सिखाया

'लालोः श्रीकृष्ण सदा सहाय' ने मुझे हार ना मानना सिखाया है। आशा और लड़ने का जो जुनून है, वो इस किरदार ने दिया है। यह मेरी ईमानदारी और मेहनत को बढ़ाएगा। रही बात किरदार की तैयारी की तो ऐक्टर के तौर पर हमें बहुत न्यूट्रल रहना पड़ता है। दरअसल, मैं जहां से आता हूं, वो जूनागढ़ है। वहां की भाषा अलग है। ऐसे में मुझे सौराष्ट्र की भाषा, वहां के लोगों का रहन-सहन सब सीखना पड़ा। मुझे रिक्शा चलाना, रिक्शे वाले का जीवन, वहां के लोग कैसे होते हैं, सब सीखना पड़ा। ऐक्टिंग टेक्नीक अपनी जगह पर इस किरदार के लिए नई चीजें सीखनी पड़ीं। मैंने मजाक में कहा था कि अगर फिल्म या ऐज एन ऐक्टर मैं नहीं चलता तो ऑटो चला लूंगा क्योंकि ऑटो सीखा था। हालांकि, फिल्म की सफलता ने हमारी मेहनत में चार-चांद लगा दिए।

मेरा वैल्यू सिस्टम मजबूत हुआ है

भगवान में आस्था, खुद पर विश्वास, ये अच्छी चीजें बचपन से मेरे साथ थीं। इस फिल्म के बाद यह और पक्का हो गया। थोड़ा डर जरूर था कि क्या मैं सही कर रहा हूं क्योंकि ऐक्टिंग एक अनिश्चित इंडस्ट्री है। आज काम है तो कल नहीं। हर फिल्म, हर नाटक के बाद खुद को तराशना पड़ता है। मैं नौ साल से थिएटर कर रहा हूं, उसने मेरे विचारों पर मुहर लगा दी। इस किरदार के बाद कह सकता हूं कि मेरा वैल्यू सिस्टम और मजबूत हुआ है।

पैसे नहीं थे पर नींद बहुत अच्छी आती थी

मैं बचपन से ऐक्टर बनना चाहता था। अगर बच्चन साहब नहीं होते तो शायद ऐक्टर बनने का कीड़ा ही न पैदा होता। मैं मम्मी के सामने उनके सीन परफॉर्म करता था। मम्मी को मुझ पर सबसे ज्यादा भरोसा था। अहमदाबाद प्रीमियर में उनकी आंखों में जो चमक थी, वह मेरे लिए सबसे बड़ा अवॉर्ड है। मैं 30 साल का हूं और पहली बार लगा कि मैंने मां-बाप और भाई के लिए कुछ किया है। हमारा बड़ा फाइनेंशल बैकग्राउंड नहीं है पर सपोर्ट हमेशा मिला। थिएटर में पैसे नहीं थे। कॉस्ट्यूम, सेट खुद बनाते, बैकस्टेज खुद काम करते थे। कभी 200–300 रुपये बचते थे तो टीम के साथ खाना खा लेते थे लेकिन नींद बहुत अच्छी आती थी।

आर्टिस्ट के रूप में मैं थोड़ा जिद्दी हूं

पता नहीं था कि ऐक्टिंग तक कैसे पहुंचा जाए। बस सुन रखा था कि मुंबई जाओ, फोटोशूट कराओ, डायरेक्टर से मिलो पर मुझे लगा यह मेरा रास्ता नहीं है। मैं किसी अनजान डायरेक्टर के पास जाकर क्यों कहूं कि सर, मैं एक्टर हूं, मुझे ले लीजिए। वह क्यों लेगा? पहले मुझे उसका ट्रस्ट जीतना पड़ेगा। तय किया कि अपना क्राफ्ट मजबूत करूंगा। बिजनेस क्या है, पैसा कहां से आएगा, ये सब मुझे समझ नहीं आते थे पर अब पैसा भी आने लगा है। सही रास्ते पर चलते-चलते समझ आया कि पैसे रास्ते में हैं, बस झुककर उठाने हैं लेकिन ईमानदारी से। मैंने कमर्शल नाटक नहीं किए। कई बार ऑफर आया पर मैच नहीं हुए। एक आर्टिस्ट के रूप में मैं थोड़ा जिद्दी हूं। मुझे खुद पर भरोसा था कि जो नहीं कर रहा हूं, वो सही कर रहा हूं।

थिएटर करके इंसान खुद को पहचानता है

जब कोई चीज नहीं आती तो मैं खुद से बहुत गंदे तरीके से बोलता हूं। शायद, किसी को अपने आप से इस तरह बात नहीं करनी चाहिए पर मेरे लिए यह बूस्ट है। यह मेरा फ्यूल है कि तुझे कैरेक्टर बनना है तो तुझे सीखना होगा। इसी वजह से मैं खुद को सबसे बड़ा आलोचक मानता हूं और यह अच्छी बात है। अगर मैं खुद अपना काम अच्छे से नहीं करूंगा तो आगे कैसे बढ़ूंगा। ग्रोथ तभी है, जब खुद को जलाने का फ्यूल अपने पास हो। लोग सच नहीं, बस अच्छा सुनना चाहते हैं। मुझे सच सुनना है। गुजरात में 23-24 लोग हैं, जो मुझसे खुलकर सच बोलते हैं, वही मेरे लिए सबसे लकी हैं। जब बहुत स्टेज-फेम मिल जाता है तो ऐसे लोग कम हो जाते हैं और चापलूस बढ़ जाते हैं। मुझे चापलूसों से नफरत है। गुजराती में उन्हें पैरासाइट कहते हैं। वे आपको खोखला कर देते हैं। ऐक्टर के तौर पर मैं हमेशा सच के पीछे भागता हूं, किरदार की सच्चाई क्या है, वही ढूंढता हूं। थिएटर मेरे लिए आईना है। हर इंसान को थिएटर करना चाहिए, चाहे एक्टर बने या नहीं क्योंकि वहां इंसान खुद को पहचानता है।

CONTINUED ON ▸ 3

CCI NG 3.7 Product: LucknowMasalamixBS PubDate: 15-02-2026 Zone: Lucknow Edition: 1 Page: LTMMPG2 User: cci Time: 02-14-2026 20:38 Color:

'बच्चे को हो स्क्रीन की लत तो सही दिशा देना ज़रूरी'

आज के डिजिटल दौर में बच्चों का स्क्रीन की ओर आकर्षित होना सामान्य है, लेकिन ज्यादा स्क्रीन टाइम उनकी सेहत, व्यवहार और सामाजिक विकास पर असर डाल सकता है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, सिर्फ स्क्रीन से रोकना काफी नहीं, बल्कि उन्हें अच्छे और क्रिएटिव ऑप्शन देना ज्यादा जरूरी है।

पॉजिटिव डायरेक्शन देना जरूरी: प्राइवेट हॉस्पिटल में डायरेक्टर (नियोनेटोलॉजी और पीडियाट्रिक्स) डॉ. पूनम सिदाना बताती हैं कि जब बच्चों में स्क्रीन की लत के संकेत दिखें, तो बार-बार रोकने के बजाय उन्हें वैकल्पिक गतिविधियों की ओर प्रेरित करें। जैसे स्क्रीन मत देखो कहने के बजाय चलो बाहर खेलते हैं, किताब पढ़ते हैं या साथ में कोई गेम खेलते हैं, कहना ज्यादा असरदार होता है। बच्चे इस तरह की भाषा को जल्दी समझते हैं।

स्क्रीन टाइम को समझना जरूरी: सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि बच्चा दिन में कितना समय स्क्रीन पर बिताता है, क्या देखता है और स्क्रीन बंद होने पर उसका व्यवहार कैसा रहता है। यही जानकारी आगे सही योजना बनाने में मदद करती है।

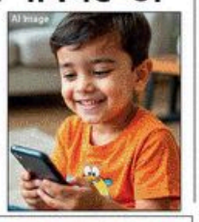

घर में तय करें स्क्रीन नियम: डॉ. सिदाना के अनुसार, घर में एक रूटीन होना जरूरी है। स्क्रीन टाइम की सीमा तय करें और डाइनिंग टेबल या बेडरूम जैसी जगहों को 'नो स्क्रीन जोन' बनाएं। पैरेंट्स खुद भी उदाहरण पेश करें, क्योंकि बच्चे वही सीखते हैं, जो घर में देखते हैं।

कारण समझना भी जरूरी: साइकोलॉजिस्ट अर्चना माहेश्वरी के अनुसार, बच्चे कई बार बोरियत, अकेलापन, खेलने की जगह की कमी या माता-पिता के व्यस्त रहने के कारण ज्यादा स्क्रीन की ओर आकर्षित होते हैं। इन वजहों को समझना ही सही समाधान की शुरुआत है।

HEALTH & WELLNESS TIMES interact

EDUCATION FORUM TIMES interact

GALLERIA TIMES interact

GET NOTICED TIMES interact

BOOK YOUR VEHICLE ADS
TO BOOK ONLINE LOG ON TO ads.timesofindia.com
SCAN QR CODE

मूवी रिव्यू कॉर्नर

'रोमियो' बनकर चमके शाहिद, तृप्ति भी कम नहीं

Upma.Singh@timesofindia.com

'कमीने' और 'हैदर' जैसी यादगार फिल्मों के बाद डायरेक्टर विशाल भारद्वाज और शाहिद कपूर की जोड़ी अब 'ओ रोमियो' लेकर आई है और इस बार भी विशाल के 'उस्तरा' बनकर शाहिद ने धारदार ऐक्टिंग की है।

पहले सीन में ही उस्तरा (शाहिद कपूर) की धमाकेदार एंट्री फिल्म का डार्क टोन सेट कर देती है। उस्तरा वो खतरनाक सुपारी किलर है, जो अपने निशाने के शरीर से आत्मा अलग कर देता है, पर उसे अपनी धुन पर नचाते हैं, खान साहब (नाना पाटेकर)। आईबी कॉप खान साहब उस्तरे से दूसरे गैंगस्टर्स का सफाया करवाते हैं। तभी इस दिलफेंक मनचले की जिंदगी में आती है अफ्शां (तृप्ति डिमरी), जो उसे खूंखार गैंगस्टर जलाल (अविनाश तिवारी) और उसके तीन साथियों की सुपारी देने आती है, लेकिन रोमियो बना जाती है। अब ऐसा क्या होता है? अफ्शां क्यों जलाल को मारना चाहती है? ये रोमियो अपनी आशिकी में किस हद तक जाता है?, यह सब जानने के लिए फिल्म देखनी होगी।

कहानी लेखक हुसैन जैदी की किताब माफिया क्वीन्स ऑफ बॉलिवुड से ली गई है, जिस पर विशाल भारद्वाज ने इश्क और बदले की रोमांचक दुनिया रची है। गैंगस्टर्स की यह दुनिया स्याह, खून-खराबे से भरी है, तो कई बार भारीपन भी महसूस होता है। लेकिन तभी विशाल भारद्वाज उसमें मोहब्बत, दोस्ती और अपनेपन की मिठास घोल देते हैं। उस पर नब्बे के धीरे धीरे से मेरी जिंदगी में आना... और ऐ मेरे हमसफर... जैसे गाने भी सुकून देते हैं। संगीतकार के रूप में भी वह अव्वल रहे हैं। गुलजार के लिखे आशिकों की कॉलोनी, फीवर, नीचे पान की दुकान जैसे सभी गाने प्रभावी हैं। बात करें ऐक्टिंग की तो उस मामले में भी फिल्म बेहद समृद्ध है। शाहिद की परफॉर्मेंस बेहतरीन है। उन्हें इस किरदार में आवारगीपना, खौफ, दर्द, इश्क सब दिखाने का मौका मिला है और वे इस मौके को भुनाने में नहीं चूके हैं। वहीं, तृप्ति ने भी अफ्शां की मासूमियत, उसका गुस्सा, अपराधबोध, जिद हर पहलू को बखूबी पर्दे पर उतारा है। नाना पाटेकर भी जब-जब स्क्रीन पर आते हैं, छा जाते हैं। जलाल के रूप में अविनाश तिवारी भी कड़क हैं, पर उनके किरदार में ज्यादा लेयर नहीं है, जो फिल्म की कमजोर कड़ी भी है। जबकि, क्लासिकल गाने वाले इंस्पेक्टर पठारे के रूप में राहुल देशपांडे, उस्तरा के दोस्त के रूप में हुसैन दलाल का काम बढ़िया है। वहीं, दिशा पाटनी, तमन्ना भाटिया, अरुणा ईरानी, विक्रांत मैसी, फरीदा जलाल के कैमियो फिल्म में स्टार पावर जोड़ते हैं। डीओपी बेन बर्नहार्ड की सिनेमटोग्राफी और डेनी डेल रसारियो का ऐक्शन बढ़िया है। फिल्म की एक खामी इसका तीन घंटा लंबा रनटाइम है। एडिटर आरिफ शेख को इसे 20 मिनट कम करना चाहिए था।

> **फिल्म**
> **ओ रोमियो**
> **रेटिंग** ★★★½☆
> **निर्देशक:** विशाल भारद्वाज
> **कलाकार:** शाहिद कपूर, तृप्ति डिमरी, नाना पाटेकर, अविनाश तिवारी, तमन्ना भाटिया, दिशा पाटनी, फरीदा जलाल, हुसैन दलाल, अरुणा ईरानी आदि।
> **अवधि:** 2 घंटे 57 मिनट
> **जॉनर:** रोमांस, गैंगस्टर ड्रामा

> **क्यों देखें**
> यह रोचक गैंगस्टर ड्रामा शाहिद-तृप्ति की उम्दा अदाकारी के लिए देख सकते हैं।

आदर्श-शनाया के प्यार पर मगरमच्छ का वार

Upma.Singh@timesofindia.com

बॉलिवुड में सर्वाइवल थ्रिलर जॉनर की फिल्में कम बनती हैं। इसीलिए बिजॉय नांबियार की शनाया कपूर और आदर्श गौरव स्टारर फिल्म तू या मैं को लेकर दर्शकों में उत्सुकता थी। अच्छी बात यह है कि आज के मॉडर्न प्यार और इंफ्लुएंसर कल्चर के ताजगी भरे परिवेश और जान बचाने की सांसें थामने वाली जद्दोजहद आपको फिल्म से बांधे रखती है।

कहानी दो अलग बैकग्राउंड के सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर अवनी शाह (शनाया कपूर) और मारुति कदम (आदर्श गौरव) की है। रईस परिवार की अवनी सोशल मीडिया पर मिस वैनिटी के नाम से मशहूर है। वहीं, नालासोपारा के चॉल का मारुति उर्फ आला फ्लोवारा अपने रैप और कंटेंट क्रिएशन के दम पर नाम कमाना चाहता है। अवनी और मारुति के रास्ते टकराते हैं। मुलाकातें बढ़ती हैं और प्यार हो जाता है। फिर आती है वही अमीर-गरीब वाली खाई। दोनों की नजदीकियां अवनी की टीटी-जीजा को अखरने लगती है। ऐसे में, दोनों सारे झमेलों से दूर गोवा निकलते हैं, लेकिन किस्मत उन्हें कोंकण के एक सुनसान इलाके में 20 फिट गहरे खाली स्विमिंग पूल में पहुंचा देती है, जहां उन दोनों के अलावा है एक मगरमच्छ। अब प्रेम कहानी में अचानक आया यह मगरमच्छी क्यों ट्विस्ट उन्हें कहां ले जाता है? इसके लिए थिएटर का रुख करना होगा।

तू या मैं थाई फिल्म द पूल का देसी अडाप्टेशन है, जिसे राइटर हिमांशु शर्मा ने मुंबइया माहौल में अच्छे से सेट किया है। अवनी और मारुति का इंफ्लुएंसर वाला बैकग्राउंड ताजगी भरा है। वहीं, सेकंड हाफ में फिल्म कई जगह सांसें थामने पर मजबूर करती है। डायरेक्टर बिजॉय नांबियार अब क्या होगा? वाला टेंशन लगातार बनाए रखते हैं। साथ ही फिल्म विकास के नाम पर जंगलों-पहाड़ों जैसी प्राकृतिक संपदाओं पर हो रहे आघात की ओर भी इशारा करती है। हालांकि, अभिषेक अरुण बादेकर का स्क्रीनप्ले रोमांस से सर्वाइवल थ्रिलर में जिस तरह से अचानक तब्दील होता है, उसमें एक स्मूथनेस या लयात्मकता की कमी महसूस होती है। अवनी और मारुति के रोमांस वाला बिल्ड अप भी लंबा है। इसके अलावा, उस तूफानी बारिश और पानी में केयरटेकर का फोन बार-बार बजने, पुलिस को अवनी-मारुति की लोकेशन न मिलने जैसी खामियां भी नजर आती हैं। लेकिन परफॉर्मेंस और तकनीकी रूप से फिल्म मजबूत है। नालासोपारा के छोटी खोली बड़े सपने वाले रैपर के रूप में आदर्श गौरव ने सटीक अभिनय किया है। वहीं, शनाया कपूर भी मिस वैनिटी के रूप में प्रभावित करती हैं। इसके अलावा, अंश विकास चोपड़ा ने भी खूब एंटरटेन करते हैं। वहीं, पारुल गुलाटी का काम ठीकठाक है। वीएफएक्स और मगरमच्छ को क्रिएट करने वाली एनिमेट्रॉनिक्स टीम का काम भी तारीफ के लायक है। कुल मिलाकर, मनोरंजन की कसौटी पर खरी उतरती यह फिल्म देखी जानी चाहिए।

> **फिल्म**
> **तू या मैं**
> **रेटिंग** ★★★☆☆
> **निर्देशक:** बिजॉय नांबियार
> **कलाकार:** आदर्श गौरव, शनाया कपूर, पारुल गुलाटी, अंश विकास चोपड़ा आदि।
> **अवधि:** 2 घंटे 30 मिनट
> **जॉनर:** सर्वाइवल ड्रामा, रोमांस

> **क्यों देखें**
> सर्वाइवल ड्रामा के रोमांचक अनुभव के लिए देखनी चाहिए।

सोचने पर मजबूर करती वेब सीरीज

Upma.Singh@timesofindia.com

बहुत कम मर्डर मिस्ट्री ऐसी होती हैं, जहां आपका ध्यान खूनी कौन था? सोचने के बजाय किरदारों की जिंदगी, उनके दुख, उलझनों और जटिलताओं में रम जाए। वेब सीरीज कोहरा की यही खासियत है कि इसमें सिर्फ अपराध ही नहीं, हर किरदार की जिंदगी और रिश्तों पर पड़ी धुंध भी धीरे-धीरे छंटती है। यही खूबी इसके दूसरे सीजन कोहरा 2 में भी दिखती है।

कहानी इस बार पंजाब के दलेरपुरा पहुंचती है, जहां अमरपाल गरुंडी (बरुन सोबती) जगराना की पुरानी जिंदगी भुलाकर नई पोस्टिंग के साथ-साथ पत्नी सिल्की के साथ नई जिंदगी शुरू करता है। तभी वहां एक एनआरआई लड़की प्रीत (पूजा बुमराह) का अपने घर के चारागाह में मर्डर हो जाता है। केस को अमरपाल की सीनियर एसआई धनवंत कौर (मोना सिंह) लीड करती है। शुरुआती जांच में शक की सुई प्रीत के पति (रणविजय सिंघा), उसके डांस इंस्ट्रक्टर और भाई (अनुराग अरोड़ा) पर जाती है, मगर इस जुर्म की जड़ें समाज की एक ऐसी बुराई में धंसी मिलती हैं कि आप सन्न रह जाते हैं। सीजन वन की तरह कोहरा 2 भी एक स्लो बर्न यानी बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ने वाली सीरीज है। ऐसे में, हर पल ट्विस्ट वाले क्राइम थ्रिलर के रोमांच की उम्मीद करने वाले निराश हो सकते हैं, क्योंकि सीरीज इस बार भी एक धुंधली, ठंडी और बेचैन दुनिया में ले जाती है, जहां मर्डर मिस्ट्री के बहाने इंसानों के भीतर का दर्द और अंधेरापन सामने आता है। आपकी रुचि खूनी के बजाय किरदारों की निजी जिंदगी खासकर धनवंत की पारिवारिक त्रासदी और अमरपाल के अतीत और आज के रिश्तों की कशमकश में ज्यादा हो जाती है। लेकिन बाकी किरदार की बैकस्टोरी इस बार उतनी दमदार नहीं है। सुदीप शर्मा और फैसल रहमान का निर्देशन रियलिस्टिक है। पंजाब के धुंध, सन्नाटे और उदासी को कहानी के साथ बहुत खूबसूरती से एकसार किया गया है। सिनेमैटोग्राफी और बैकग्राउंड स्कोर इसे और गहरा बनाते हैं। उस पर मोना सिंह और बरुन सोबती की परफॉर्मेंस शो की जान है। अमरपाल के रूप में बरुन सोबती फिर पानी की तरह ढल गए हैं। उनकी डायलॉग डिलिवरी, डार्क ह्यूमर जबरदस्त है। वहीं, मोना सिंह भी निजी जिंदगी की तकलीफों से जूझते हुए ड्यूटी को ऊपर रखने वाली धनवंत के दर्द को बखूबी उभारती हैं। सहयोगी कलाकारों में रणविजय सिंघा, पूजा बुमराह, अनुराग अरोड़ा, प्रचार्क मेहता और सत्यकाम आनंद अपनी भूमिकाओं संग न्याय करते हैं।

> **वेब-सीरीज**
> **कोहरा 2 (16+)**
> **रेटिंग** ★★★½☆
> **निर्देशक:** सुदीप शर्मा, फैसल रहमान
> **कलाकार:** मोना सिंह, बरुन सोबती, रणविजय सिंघा, पूजा बुमराह, अनुराग अरोड़ा आदि।
> **स्ट्रीमिंग साइट:** नेटफ्लिक्स
> **एपिसोड:** 6 एपिसोड (40 मिनट)
> **जॉनर:** क्राइम ड्रामा, मर्डर मिस्ट्री

> **क्यों देखें**
> कोहरा फ्रेंचाइजी के फैन हैं तो बरुन सोबती और मोना सिंह की उम्दा अदाकारी के लिए देखें।

'कंप्यूटर रिपेयरिंग का काम करता था'

CONTINUED FROM 1

करण जोशी बताते हैं कि दसवीं पास करके मैंने हार्डवेयर इंजीनियरिंग का डिप्लोमा किया। लोगों के घर जाकर कंप्यूटर और रिपेयरिंग का काम करता था। सर्टिफिकेट आने से पहले ही प्रोफेशनली जॉब करने लगा था। हालांकि, थोड़े समय बाद लगा कि मैं इसके लिए नहीं हूं। फिर करीब 10 महीने रात में कॉल सेंटर में काम किया और उसे भी छोड़ दिया। फिर मेरी जिंदगी में थिएटर आया, तब NSD, FTII और BNA का पता चला। एडमिशन के लिए बेसिक डिग्री जरूरी होती है तो मैंने हिंदी लिटरेचर लिया, ताकि कहीं जाना हो तो डिग्री की कमी बाधा न बने। हिंदी में हरिवंशराय बच्चन, प्रेमचंद, भारतेंदु हरिश्चंद्र जैसी विभूतियों को पढ़ा तो समझ आया कि भाषा और साहित्य से क्राफ्ट गहराता है। कॉलेज में थिएटर शुरू किया। बाहर एक ग्रुप था, वहां किया। मैं पहले बाहर जाने की बजाए खुद को लायक बनाना चाहता था। हालांकि, ऐसा संयोग नहीं बना कि मैं एडमिशन का फॉर्म भरूं पर सीखना और काम करना जारी रहा।

पता था चमत्कार नहीं, विचार बनेंगे ताकत

फिल्म की ताकत चमत्कार नहीं, विचार है और ये हमें पहले से पता था। हमारी दादी, मम्मी, पिताजी सबने बचपन से जो विचार और सीख दीं, जो भगवद्गीता में लिखी बातें हैं, वही इंसान को बेहतर बनाती हैं। मैं मानता हूं कि मेरा क्राफ्ट, काम और उसके प्रति ईमानदारी ही मेरे लिए कृष्ण है। अच्छे विचार, जो बुराई से बचाएं वही मेरे लिए कृष्ण है। यह मेरा आध्यात्मिक पहलू है। अगर यह मुझे अपील कर सकता है तो लोगों को करेगा और किया भी। फिल्म रिलीज के बाद थिएटर में ऑडियंस से मिलने पर पता चला कि दर्शक लालो से बहुत कनेक्ट हुए। आज चारों तरफ नकारात्मकता और अकेलापन है। लोग मुस्कान के मुखौटे पहनकर घूमते हैं। ऑडियंस के लिए यह ट्रीटमेंट नया था। वे खुद को लालो मानने लगे। हम शुरुआत से जानते थे कि यह विचार सबके लिए सही रहेगा। हर इंसान सोचता है कि मैं जहां पहुंचना चाहता हूं, वहां कैसे पहुंचूंगा, ये विचार ही इंसान को खड़ा करते हैं और यही फिल्म की जान थी।

हम मार्टिन स्कोर्सेसी की फिल्म के फैन रहे हैं

फिल्म का आइडिया जब पहली बार लेखक-निर्देशक अंकित के दिमाग में आया, उसी दिन से मैं और अंकित दोनों ऑन बोर्ड थे। छोटे बजट और सीमित संसाधनों में फिल्म बनाने के लिए तैयार थे। हम मार्टिन स्कोर्सेसी (Martin Scorsese) की फिल्म टैक्सी ड्राइवर के फैन रहे हैं। वो फिल्म कम बजट में बनी पर उसकी लाइटिंग और ट्रीटमेंट कमाल का था। हमने सोचा कि जो लिमिटेशंस हैं, उसी में बनाते हैं। इसी सोच से हमने रिक्शा ड्राइवर चुना। दरअसल, ड्राइवर हमेशा जर्नी में रहता है। लोगों को उनकी डेस्टिनेशन तक पहुंचाता है लेकिन उसकी खुद की डेस्टिनेशन सबसे आखिर में आती है। मैं तो पहले दिन से ही इससे जुड़ा था।

मनोज पाहवा, गीता अग्रवाल के साथ भुवन पहुंचे थे मॉल

CONTINUED FROM 1

इससे पहले भुवन बाम शहीदपथ स्थित एक मॉल पहुंचे थे। वहां भी उनकी फिल्म का सीक्वेंस शूट हो रहा था, जिसमें लखनऊ में कई बार सीन फिल्मा चुके ऐक्टर मनोज पाहवा और ऐक्ट्रेस गीता अग्रवाल शर्मा शामिल थे। इस दौरान तीनों कलाकार हंसी-ठिठोली करते दिखे। वहीं, आईआईएम रोड पर कार पलटने का सीन भी शूट किया था। उसी दिन एक सीक्वेंस कुड़िया घाट पर भी शूट हुआ था। बता दें कि फिल्म का एक महीने का शेड्यूल है, जिसमें लखनऊ की अलग-अलग लोकेशंस के अलावा कानपुर में कई और सीन शूट किए जाने हैं। रोम-कॉम फिल्म का निर्देशन शरण शर्मा कर रहे हैं, जो कि इससे पहले गुंजन सक्सेना: द कारगिल गर्ल और मिस्टर एंड मिसेज माही जैसी फिल्में बना चुके हैं। यह फिल्म करण जौहर बना रहे हैं।

दिब्येंदु की सीरीज की भी शूटिंग शुरू

क्रिमिनल जस्टिस, अनदेखी, मिर्ज़ापुर के बाहुबली जैसी वेब सीरीज में काम कर चुके ऐक्टर दिब्येंदु भट्टाचार्य की वेब सीरीज की शूटिंग भी लखनऊ में शुरू हो चुकी है। वह यहां वेब सीरीज कार चार की शूटिंग के सिलसिले में आने वाले हैं। सूत्रों के मुताबिक, सीरीज का शहर में करीब दस दिनों का शूट है, जबकि इससे पहले काफी हिस्सा मुंबई में फिल्माया जा चुका है।

संचिता बसु और धवल कुमार भी हैं शहर में

ऐक्ट्रेस संचिता बसु और धवल कुमार की जोड़ी को स्क्रीन पर बेहद पसंद किया गया था। दोनों कलाकार एक साथ वेब सीरीज रुकतः के मेरा प्यार में नजर आए थे। इस दिनों सीरीज का दूसरा सीजन शूट किया जा रहा है। वेब सीरीज का निर्देशन श्रद्धा पासी जैरथ ने किया है, जबकि इसका लेखन शागिर्द, साहेब बीवी और गैंगस्टर रिटर्न्स व मिलन टॉकीज जैसी फिल्मों के राइटर कमल पांडे कर रहे हैं। लोकल लाइन प्रोड्यूसर मानसी पांडे और अष्टभुज पांडे ने बताया कि इस सीजन में लखनऊ के तमाम लोकल कलाकारों को भी मौका दिया जा रहा है।

12 राशियां और आपका दिन

ARIES (21 Mar - 19 Apr)
शाम से रात तक पत्नी व बच्चों के साथ आनंदपूर्ण की यात्रा का योग है। आज व्यापार में प्रगति से आपको काफी हर्ष होगा। वैवाहिक जीवन भी आज आनंद में बीतेगा। विद्यार्थियों को बौद्धिक और मानसिक बोझ से छुटकारा महसूस होगा। घूमने फिरने के दौरान भी कोई महत्वपूर्ण जानकारी मिल सकती है।

TAURUS (20 Apr - 19 May)
राशि स्वामी शुक्र की दशम कर्म भाव में स्थिति और चंद्रमा का मकर राशि पर संचार आश्चर्य और मन का संतोष का देने वाला है। किसी बहुप्रतीक्षित शुभ परिणाम से भी हर्ष होगा। रात का समय प्रिय व्यक्ति से मिलने और हास्य विनोद में व्यतीत होगा, जिससे आपके दिमाग को भी रिलेक्स मिलेगा।

GEMINI (21 May - 21 Jun)
राशि अधिपति बुध अष्टक भाव में और चंद्रमा मकर राशि का है। इसलिए आज जो भी काम आप करेंगे सरलता से हो जाएगा। व्यर्थ के कामों में समय बर्बाद न करें। जायदाद या किसी अन्य मूल्यवान वस्तु की सौदेबाजी करने से पहले उसके सारे वैधानिक दस्तावेजों का अच्छी तरह अध्ययन कर लें।

CANCER (22 Jun - 22 July)
राशि से द्वादश व्यय भाव में मिथुन राशि का गुरु और सप्तम भाव में चंद्रमा आज सर्वत्र विजय, विभूति, सफलता देने वाला है। पराक्रम वृद्धि से शत्रुओं का मनोबल गिरेगा। बच्चे खेल कूद में तो पत्नी हास्य रस में विभोर रहेगी। शाम के समय किसी विद्वान प्रकाशक से मिलने का अवसर प्राप्त हो सकता है। इससे आपको लाभ होगा।

LEO (23 July - 22 Aug)
राशि का स्वामी सूर्य मकर सप्तम भाव में तथा षष्ठम भाव में चंद्रमा है। इनसे सांसारिक सुख भोग, सम्मान वृद्धि, भाग्य विकास का सुयोग तो चल ही रहा है, नई खोजों में भी रुचि बढ़ेगी। पुराने कलत्र-मित्रों के मिलने से नई आशाओं का संचार होगा, घर में उत्सव जैसा माहौल बनेगा।

VIRGO (23 Aug - 22 Sep)
आज किसी प्रिय व्यक्ति के स्वास्थ्य को लेकर आप चिंतित रहेंगे। काम का भार भी आज कुछ ज्यादा अनुभव करेंगे। अपने जूनियर्स से काम निकालने के लिए प्यार से काम लेना होगा। घर में भी खुशी से वातावरण हल्का फुल्का बनाए रखें, खुशी-खुशी काम बनेंगे। घर की समस्याएं अपने आप हल हो जाएंगी।

LIBRA (23 Sep - 22 Oct)
आज के दिन का मिलाजुला प्रभाव रहेगा। किसी भी मामले में फैसला जल्दबाजी में न करें। व्यक्तिगत मामलों को व्यावसायिक मामलों के बीच में लाने से हानि हो सकती है। प्रेमी या किसी अन्य निकट के व्यक्ति से कोई गलतफहमी हुई है तो उसे बातचीत से सुलझाया जा सकता है। व्यर्थ के विवाद से आपको नुकसान हो सकता है।

SCORPIO (23 Oct - 21 Nov)
आज आपकी अपने साथियों के बीच लोकप्रियता बढ़ेगी। किसी राजनीतिज्ञ से मित्रता व दोस्ती होगी और उसके अनुभव का लाभ भी आपको होगा। विद्यार्थियों को सलाह है कि अपना अधिक से अधिक समय अध्ययन में लगाएं। शाम से लेकर रात का समय पाठ पूजा व किसी धार्मिक अनुष्ठान में बीतेगा।

SAGITTARIUS (22 Nov - 21 Dec)
आज आपके विरोधी परास्त होंगे। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। राजनीतिक सहयोग भी मिलेगा, लेकिन वाणी पर संयम रखें। रुपये के लेन-देन में सावधानी बरतें। शाम से लेकर रात तक प्रियजन संबंध प्रगाढ़ होंगे। यात्रा में सावधान रहें। मित्रों और ससुराल पक्ष से सहयोग मिलता रहेगा।

CAPRICORN (22 Dec - 19 Jan)
आज आपको कोई उपहार या सम्मान मिलेगा। कोई पुरानी महिला मित्र से मुलाकात और धन लाभ होने से हर्ष हो सकता है। रोजी-रोजगार की दिशा में भी सफलता मिलेगी। शाम से लेकर रात तक अनचाही यात्रा का योग है। यात्रा लाभप्रद सिद्ध होगी, प्रियजनों से भेंट संभव है।

AQUARIUS (20 Jan - 18 Feb)
राशि का स्वामी शनि उदय हो चुका है। मकर द्वितीय धन कोष में चंद्रमा संतान पक्ष से हर्ष और लक्ष्मी की बड़ी मात्रा में प्राप्ति से कोष वृद्धि कारक है। अपनी उत्तम कार्यशैली व मृदु व्यवहार का आज भी आपको लाभ मिलेगा। दूसरों से सहयोग लेने में आपको सफलता प्राप्त होगी।

PISCES (19 Feb - 20 Mar)
राशि स्वामी बृहस्पति मिथुन राशि पर विराजमान होने से आपका उत्कर्ष कर रहा है। आज सुबह से ही भागदौड़ रहेगी। किसी मांगलिक या धार्मिक आयोजन की व्यवस्थाओं में व्यस्त रहेंगे। मित्र व उच्चाधिकारियों से शाबासी मिलेगी। शाम से लेकर रात तक जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। मित्रों का सहयोग मिलता रहेगा।

जन्मदिन की शुभकामनाएं

इस वर्ष शनि, शुक्र और गुरु का मिश्रित प्रभाव आपके लिए सामान्य से अधिक शुभ फलदायक रहेगा। बुध और सौम्य ग्रहों का दशम कर्म भाव में प्रभाव आपको कार्यक्षेत्र में सम्मान और मनोकामनाओं की पूर्ति के अवसर प्रदान करेगा। फरवरी माह के शेष दिनों से लेकर मार्च के बीच अत्यधिक उग्रता के कारण स्वास्थ्य पर थोड़ा विपरीत प्रभाव पड़ सकता है, इसलिए अपनी दिनचर्या संतुलित रखें। अप्रैल और मई में कार्यशैली में सकारात्मक बदलाव करने से लाभ के नए अवसर प्राप्त होंगे। जून और जुलाई में कुछ कार्यों में रुकावट आ सकती है। अगस्त-सितंबर में किसी शुभ या मांगलिक काम की योजना बन सकती है, जिससे परिवार में खुशी का वातावरण रहेगा। अक्टूबर में निकट या छोटी यात्रा के योग बन रहे हैं, जो आपके लिए लाभकारी सिद्ध होंगी। नवंबर और दिसंबर में पर्यटन पर खर्च करने से मानसिक शांति और प्रसन्नता मिलेगी। जनवरी से फरवरी के बीच विशेष सफलता प्राप्ति के लिए बृहस्पतिवार के दिन मीठे पीले चावल बनाकर जरूरतमंद लोगों को दान करें। -आचार्य कृष्ण दत्त शर्मा

कल का पंचांग (सोमवार, 16 फरवरी 2026)

राष्ट्रीय मिति माघ 27, शक संवत 1947, फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी, सोमवार, विक्रम संवत 2082। सौर फाल्गुन मास प्रविष्टे 5, शाबान 27, हिजरी 1447 (मुस्लिम) तद अनुसार अंग्रेजी तारीख 16 फरवरी 2026 ई। सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु। राहु काल सुबह 7 बजकर 30 मिनट से 9 बजे तक रहेगा। चतुर्दशी तिथि शाम 5 बजकर 35 मिनट तक के बाद अमावस्या तिथि का आरंभ होगा। वरीयान योग अर्धरात्रोत्तर 1 बजकर 50 मिनट तक के बाद परिघ योग का आरंभ होगा। शकुनि करण शाम 5 बजकर 35 मिनट तक के बाद नाग करण का आरंभ होगा। चंद्रमा दिन रात मकर राशि पर संचार करेगा।

आज के व्रत और त्योहार

श्री महाशिवरात्रि व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग

सुडोकू

6					5	3		
	5		4	6				9
		4						
	1	6		3	4		2	
	8		5		2		7	
	2		6	8		4	5	
						8		
9				7	1		3	
		7	2					5

TELEVISION

big magic

09:00 बबलू डबलू	13:30 भ से भड़े
10:00 बड्डुध बुडबक	14:00 चक्रधारी अजेय कृष्णा
11:00 रुद्र के रक्षक	15:00 लिटिल कृष्णा
12:00 चक्रधारी अजेय कृष्णा	17:00 बबलू डबलू
12:30 हम पांच	19:00 चक्रधारी अजेय कृष्णा
13:00 रुद्र के रक्षक	

महाशिवरात्रि विशेष

READER ENGAGEMENT INITIATIVE

महाशिवरात्रि महाकुम्भ में अंतिम पवित्र स्नान की तिथि है। फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी शिव अराधना का दिन है, इस दिन को हम महाशिवरात्रि के नाम से जानते हैं। यह पर्व मनुष्यों को पाप, अन्याय और अनाचार से दूर रहकर शुद्ध, पवित्र और सात्विक जीवन जीने की प्रेरणा देता हैं। यही कारण है कि इस दिन हर शिव भक्त पूरी श्रद्धा के साथ शिव की आराधना करता है

सात्विक जीवन की प्रेरणा देती है महाशिवरात्र

Amul.Rastogi
@timesofindia.com

शिव तीनों लोकों के स्वामी हैं। देवाधिदेव महादेव को सर्वशक्तिमान, करुणामय और कल्याणकारी देव के रूप में पूजा जाता है। शरीर पर भभूत, जटाओं में अर्धचंद्र, गले में सर्पों की माला, जटाओं से प्रवाहित होती पवित्र गंगा, हाथों में त्रिशूल और डमरू, इन प्रतीकों के साथ भगवान शिव का स्वरूप अत्यंत दिव्य और रहस्यमय प्रतीत होता है। उनकी बाईं ओर माता पार्वती विराजमान रहती हैं, जो शक्ति का स्वरूप हैं। शिव और शक्ति का यह संगम ही सृष्टि के संतुलन और पूर्णता का प्रतीक माना जाता है। महादेव का यह अद्भुत स्वरूप हमें सिखाता है कि जीवन में संतुलन, संयम और समर्पण ही वास्तविक पूर्णता है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार हर मास की शिवरात्रि महत्वपूर्ण होती है, लेकिन महाशिवरात्रि का विशेष स्थान है। इसे कल्याण और मोक्ष प्रदान करने वाला पर्व माना गया है। मान्यता है कि इस दिन विधि-विधान से भगवान शिव की पूजा करने से सुख, शक्ति, समृद्धि और मानसिक शांति प्राप्त होती है। शिव को भोलेनाथ भी कहा जाता है, क्योंकि वे अपने भक्तों की सच्ची भक्ति से शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं और बिना भेदभाव के सभी पर कृपा करते हैं। राम और शिव का परस्पर संबंध भी धर्म में अत्यंत पूजनीय माना गया है—राम शिवमय हैं और शिव राममय। एक साकार है, तो दूसरे निराकार; लेकिन दोनों ही सत्य, धर्म और करुणा के प्रतीक हैं।

शिव विवाह से जुड़ा महापर्व

महाशिवरात्रि को महापर्व कहना अधिक उचित है। यह पर्व भगवान शिव और माता पार्वती के पावन विवाह से जुड़ा हुआ माना जाता है। इसी कारण इस दिन को प्रेम, त्याग और समर्पण का प्रतीक भी माना जाता है। महाशिवरात्रि पर दिन में सूर्य की और रात्रि में चंद्रमा की प्रधानता होती है। चंद्रमा शिव के मस्तक पर विराजमान है, और रात्रि में ग्रह-नक्षत्रों का दर्शन संभव होता है, इसलिए यह रात्रि स्वयं में शक्तिमय मानी जाती है। जिस प्रकार नवरात्रि शक्ति के उपासना का पर्व है, उसी प्रकार महाशिवरात्रि शिव और शक्ति के मिलन का उत्सव है।

कहा जाता है कि शिव का एक स्वरूप कालाग्नि है, जो कालचक्र का प्रवर्तक है, लेकिन शक्ति के बिना शिव निष्क्रिय हैं। "शिव" से "इ" हटाने पर "शव" शेष रह जाता है—अर्थात शक्ति के बिना शिव भी निर्जीव हैं। इसलिए शिव की जागृत अवस्था शक्ति के साथ ही संभव है। पंचमुखी शिव—सद्योजात, वामदेव, अघोर, तत्पुरुष और ईशान—पांचों दिशाओं में कल्याण का संदेश देते हैं। भगवान शिव को 'त्र्यम्बक' भी कहा जाता है, जिनकी तीसरी आंख ज्ञान और विनाश दोनों का प्रतीक है।

महाशिवरात्रि केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि आस्था, चेतना और आत्मिक जागरण का महोत्सव है। यह दिन भगवान शिव के दिव्य स्वरूप, उनके विवाह और उनकी कल्याणकारी शक्तियों को स्मरण करने का अवसर देता है। शिव भक्ति, व्रत, ध्यान और साधना के माध्यम से यह पर्व मनुष्य को जीवन में संतुलन, शांति और मोक्ष की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है।

शिवलिंग पूजन का महत्व

शिव पूजन में शिवलिंग का विशेष महत्व है। शिवलिंग को प्रकृति की समस्त योनियों और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रतीक माना जाता है। यह ब्रह्मांड की रचनात्मक ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है। समुद्र मंथन से निकले विष का पान कर भगवान शिव ने संपूर्ण जगत की रक्षा की और यह संदेश दिया कि वे केवल सृजन ही नहीं, बल्कि संहार और संरक्षण के भी देव हैं। तारकासुर जैसे अत्याचारी राक्षसों के वध के माध्यम से उन्होंने अधर्म का नाश किया। माता सती के यज्ञ कुंड में भस्म होने के पश्चात शिव का तांडव नृत्य उनके संहार स्वरूप का परिचायक है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वे विनाश के माध्यम से भी नवसृजन का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

महाशिवरात्रि का आध्यात्मिक संदेश

महाशिवरात्रि केवल एक पर्व नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और आत्मचिंतन का अवसर है। इसे काल की अभिव्यक्ति करने वाली रात्रि कहा जाता है, जो मनुष्य को पापकर्म, अन्याय और अनाचार से दूर रहने की प्रेरणा देती है। इस दिन व्रत, जागरण, रुद्राभिषेक, गंगा स्नान और महामृत्युंजय मंत्र का जाप विशेष फलदायी माना गया है। मान्यता है कि जो भक्त पूरी श्रद्धा से शिव की आराधना करता है, उसे जीवन के दुख, भय और कष्टों से मुक्ति मिलती है।

आधुनिक समय में महाशिवरात्रि के नए आयाम

आज के समय में महाशिवरात्रि केवल मंदिरों तक सीमित नहीं रही है। डिजिटल युग में ऑनलाइन शिव अभिषेक, वर्चुअल सत्संग और लाइव आरती के माध्यम से लोग घर बैठे भी पूजा में शामिल हो रहे हैं। कई युवा पीढ़ी इसे केवल धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि मानसिक शांति और ध्यान का अवसर मान रही है। योग, ध्यान और मंत्र साधना के जरिए लोग शिव तत्व को अपने जीवन में उतारने का प्रयास कर रहे हैं।

INDIAN INSTITUTE OF INTERIOR DESIGNERS
LUCKNOW REGIONAL CHAPTER

समागम्
संयोजन संवाद संकल्पः

Lucknow

4TH EDITION OF DESIGN CONFLUENCE AND BUILDING MATERIALS EXHIBITION

13th-16th FEBRUARY, 2026 | 10:00 AM to 8:00 PM

AT INDIRA GANDHI PRATISHTHAN, LUCKNOW

Shalabh Mani Tripathi
MLA
Deoria

Smt. Sushma Kharakwal
Hon'ble Mayor
Lucknow

Neeraj Singh
Chairman
FICCI Young Leaders
Uttar Pradesh

Ar. Aman Aggarwal
Principal Architect at Charged Voids

संवाद
15th Feb | 11:00 AM

FREE ENTRY
For Architects , Builders, Students and End Users

KEY HIGHLIGHTS OF SAMAGAM 2026

Student Workshop

Door & Furniture Hardware

Plywood, Veneer & Laminates

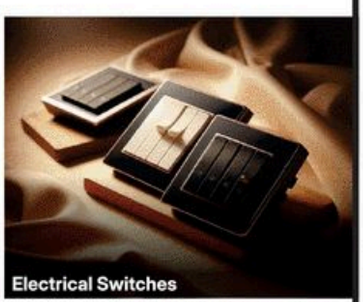
Electrical Switches

and many more products....

IN ASSOCIATION WITH

INDIAN INSTITUTE OF ARCHITECTS UP CHAPTER | LUCKNOW ARCHITECTS ASSOCIATION | YAG | Fire & Security Association of India

TITLE SPONSORS

FERRIS Interio.com | SARNA STONEX PVT.LTD.

PRIMARY SPONSORS

Ashok Enterprises PHILIPS | SINGHAL AIRCONDITIONING

ASSOCIATE SPONSORS

CERA LUXE | OZONE | TOSTEM

SUPPORTED BY

Bajrang Enterprises | KOHLER. | CHANGI | DIMORE SURFACES AND BEYOND | door bhai | KRISHNA PLY | GOELWORLD | GreatWhite Electricals

EVENT PARTNER: KAAMAKAZI Solution Pvt. Ltd.

SOCIAL MEDIA PARTNER: Digifootprints "Anything & Everything"

CCI NG 3.7 Product: LucknowMasalamixBS PubDate: 15-02-2026 Zone: Lucknow Edition: 1 Page: LTMM User: cci Time: 02-14-2026 20:28 Color:

पलाश के खिलाफ बयान पर कोर्ट ने लगाई रोक

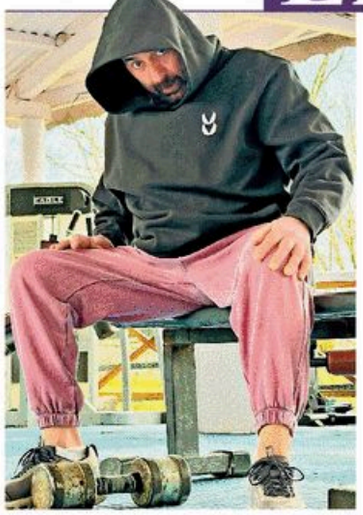

पलाश मुच्छल से स्मृति मंधाना का रिश्ता टूटने पर उनकी दोस्त ने कुछ इंटरव्यूज में पलाश पर कई गंभीर आरोप लगाए थे। इसको लेकर पलाश ने कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। अब बॉम्बे हाई कोर्ट ने स्मृति की दोस्त के पलाश के खिलाफ बयान देने पर रोक लगा दी है।

सनी देओल ने बताया खुद को फिट रखने का राज़

सनी देओल 68 साल के हो चुके हैं। लेकिन अपनी फिटनेस को लेकर चर्चा में रहते हैं। हाल में आई फिल्म बॉर्डर 2 में उनका अभिनय काफी सराहा गया है। उनके ऐक्शन सीन को काफी पसंद किया गया। ऐसे में उनके करियर को ढलता मानने वाले लोग हैरान हैं कि सनी फिटनेस और ऐक्टिंग दोनों में पहले जैसे दमदार कैसे हैं। सनी ने सोशल मीडिया पर एक्सरसाइज करते हुए फोटोज शेयर की है। साथ ही इसके साथ कैप्शन में लिखा है, 'कोई एक्सक्यूज नहीं। फिट रहो और खुश रहो।'

हाल में एक इंटरव्यू में सनी ने काम काम मिलने के अपने अनुभव को साझा किया था। उन्होंने कहा था, 'किसी भी क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्ति के जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, लेकिन सबसे जरूरी है लगातार मेहनत करते रहना। जब कई सालों के संघर्ष के बाद आपकी फिल्म सफल होती है, तब आप किस्मत पर विश्वास करने लगते हैं। उससे पहले इंसान किस्मत खुद लिखने की बात करता है।'

धनुष को फिल्म में देरी के लिए 20 करोड़ का नोटिस

धनुष पिछले कई दिनों से अपने रिलेशनशिप को लेकर चर्चा में थे, लेकिन अब खबर है कि धनुष के खिलाफ एक लीगल नोटिस जारी किया गया है, जिसमें उनसे 20 करोड़ का मुआवजा मांगा गया है। दरअसल ये मामला साल 2016 का है। एक प्रोडक्शन कंपनी का दावा है कि 2016 में धनुष के साथ एक फिल्म साइन की गई थी। तब ऐक्टर ने कंपनी से फिल्म में बतौर ऐक्टर और डायरेक्टर काम करने की बात कही थी। इसके बाद कंपनी ने कुछ बदलावों को मान लिया था। लेकिन इसके बाद भी धनुष स्क्रीनस्पेस नहीं दे पाए, जिस वजह से फिल्म लंबे समय तक रुकी रही।

'लड़की ऐसी हो जो मुझे प्यार करे, मेरे स्टारडम को नहीं'

सिद्धांत चतुर्वेदी

Rekha.Khan@timesofindia.com

अपनी भूमिकाओं को अपने खास अंदाज में निभाने वाले अभिनेता सिद्धांत चतुर्वेदी को दर्शकों ने गली बॉय, गहराइयां, खो गए हम कहां, धड़क 2 जैसी फिल्मों में खूब प्यार दिया। इन दिनों दो दीवाने शहर में से चर्चा में आए सिद्धांत इस मुलाकात में प्यार-मोहब्बत, हार्ट ब्रेक, रिजेक्शन और शादी के बारे में दिल खोल कर बातें करते हैं। अपने इनफैचुएशन के बारे में सिद्धांत कहते हैं, 'मैं उस वक्त चौथी क्लास में था। एक लड़की दिल्ली से ट्रांसफर होकर हमारे शहर आई थी। वो मेरे बगल में ही बैठती थी। बला की खूबसूरत थी। मैं तो उसे देखते ही इनफैचुएट हो गया था। मगर वो साल भर में चली गई थी। उसने जाते समय कहा था कि वो वापिस आएगी। मगर वो कभी वापिस नहीं आई, तो हमारा मेरा वो बचपन एक इश्क अधूरा रह गया।'

पहली किस नहीं भूला

पहली किस पर वे कहते हैं, 'मैं उस वक्त उन्नीस साल का था। उस चुंबन को करते हुए मुझे इटली में होने का अहसास हुआ था। मैं और वो ऑटो में थे। जो मैंने फिल्मों में देखा था, वैसा मुझे असल में महसूस हो रहा था। उस शाम को मुंबई के मौसम ने और रोमांटिक बना दिया था। अगले दिन हम मिले तो मैं शरमा गया। हमारा पहला किस डेटिंग के सालभर बाद हुआ था।

मेरा भी दिल टूटा है

हर रिश्ता जीवन में कुछ न कुछ सिखाता जरूर है। सिद्धांत अपनी रिलेशनशिप के फेल्योर पर कहते हैं, 'मेरा भी दिल टूटा है, मगर कमाल की बात ये है कि कई बार जब आप उस रिश्ते में होते हैं, तो आपको लगता है कि वो हमेशा के लिए रहने वाला है। आप उसी हिसाब से अपने भविष्य की योजना बनाते हैं, मगर जब वो चीजें टूटती हैं, तो बहुत मुश्किल होता है, उस चीज से उबरना। मैंने सीखा कि जिंदगी कई बार आपको आश्चर्यचकित करती है। लाइफ ऑफ पाई में एक सीन था। जब लड़का और टाइगर समंदर के किनारे पहुंचते हैं, तब टाइगर जंगल में आगे बढ़ जाता है। उस फिल्म में इरफान सर (इरफान खान) का डायलॉग था कि मुझे लगा वो टाइगर मुड़ेगा, मेरी तरफ देखेगा, जो सफर हमने तय किया है, उसकी बातें होंगी, लेकिन वो सीधा -सीधा चलता गया और कहीं न कहीं जंगल में जाकर गुम हो गया। तब मैंने समझा कि कई बार जाने देने का नाम ही जिंदगी है। हर रिश्ता ऐसा नहीं होता कि वो आपके साथ जिंदगी भर के लिए रहे। कई रिश्तों को आपको छोड़ना भी पड़ता है। छोड़ देने का मतलब हार मानना नहीं है। लोग बदलते हैं, चीजें बदलती हैं और आपको उसे स्वीकार करना होता है। जो आपके लिए लड़ सके और अडिग खड़ा रह सके, वो बहुत दुर्लभ होता है, जो मैंने अपने माता-पिता में देखा है। अभी तक तो मुझे ऐसा कोई मिला नहीं।'

प्यार-मोहब्बत में कई बार रिजेक्ट हुआ हूं

प्यार में हुए रिजेक्शन पर सिद्धांत कहते हैं, 'प्यार के मामले में मैं कई बार नकारा गया हूं। बचपन से रिजेक्शन का सामना करना पड़ा है। मैंने क्लासरूम में सभी के सामने लड़की को प्रपोज करके अपनी बहुत बेइज्जती करवाई है। एक्टर बनने के बाद भी रिजेक्ट हुआ हूं। असल में प्यार -मोहब्बत को लेकर मेरा अप्रोच प्रेक्टिकल नहीं होता। मेरे मन में नकारे जाने का डर इस कदर बैठा है कि मैं सामने से पहल नहीं कर पाता। असल में बचपन में काफी रिजेक्ट हुआ हूं। कई बार मैं पूछने से ही डर जाता हूं, पर रिजेक्ट होने का मजा अब है, जब मैं कुछ बन चुका हूं। तब लगता है कि वो मेरी पोजीशन या कलाकार होने की परवाह किए बगैर मुझसे चाहती है कि मैं उसे एक इंसान के रूप में सच्चे मर्द की तरह अप्रोच करूं। मेरे साथ यही हुआ था। उसे मेरी परवाह ही नहीं कर थी। मैं सोच रहा था मेरी इतनी बड़ी फैन फॉलोविंग के बावजूद इस पर कोई फर्क नहीं पड़ रहा। तो मैं ऐसे किसी की तलाश में हूं, जिसके लिए मेरा स्टारडम कोई मायने न रखता हो।'

शादी का दबाव मुझ पर भी है

हमारे समाज में ऐसा माना जाता है कि लड़कियों पर शादी का दबाव ज्यादा होता है, मगर सिद्धांत इस बात को खारिज करते हुए कहते हैं, 'मुझ पर भी घर से शादी का दबाव है। मेरी मम्मी तो रोजाना कहती हैं, पापा तो ऑफिस चले जाते हैं, तुम चले जाते हो शूटिंग और भाई चला जाता है कॉलेज, तो तुम शादी कर लो। मैंने कहा, मम्मी जो लड़की आएगी, वो भी तो काम पर जाएगी, तो मम्मी का कहना है, बच्चा-वच्चा होगा, तो मैं उसे खिलाऊंगी। मैंने तो मम्मी से कह दिया है कि 6-8 साल रुकिए अभी, पर मैं उनकी सोच भी समझ सकता हूं। उन्हें लगता है कि वे बूढ़े हो गए हैं और उनके बाद मेरा क्या होगा? मां कहती हैं, हमारे बाद तुम्हें कौन संभालेगा? मैंने तो मां से कह दिया, अगर आपको ऐसा लगता है, तो कल से जिम जाइए, फिट रहिए, आप लोगों को अभी बहुत जीना है। मुझे सेटल करवाने की रट में मैंने तो उन दोनों का जिम लगवा दिया और उनसे साफ कह दिया कि उन्हें कुछ भी उल्टा-सीधा सोचने की जरूरत नहीं है। उन्हें अभी लंबी पारी खेलनी है।'

...जिसके साथ हंसू और रोऊं

आपको जीवनसाथी के रूप में कैसी लड़की चाहिए? इस पर वे फलसफे वाले अंदाज में कहते हैं,' ऐसी लड़की जिसके साथ मजा आए। जीवन में बहुत-सी दिक्कतें होती हैं। जैसे -जैसे हम उम्रदराज होंगे, जिंदगी और मुश्किल होती जाएगी। शायद इसीलिए कहा जाता है कि शादी जल्दी कर लेनी चाहिए। इससे आपको एक कंपैनियन मिल जाता है और जिंदगी जीने में आसान हो जाती है। जिसके साथ सुख-दुख बांटने में मजा आए, जिसे रोते हुए देख उसके बालों को संवारूं।' सिद्धांत आगे कहते हैं, 'हाल ही में मेरे माता-पिता की एनिवर्सरी थी और मैंने उन्हें काठमांडू की ट्रिप पर भेजा। मम्मी को काठमांडू जाने की बड़ी ख्वाहिश थी। मेरी मम्मी पिछले कुछ दिनों से अपनी शादी की यादों को ताजा कर रही थीं कि आज हमारा तिलक हुआ था, इस दिन हम ससुराल आए थे। मम्मी की बातें सुनकर मैं सोच रहा था कि मम्मी की सबसे बड़ी पूंजी तो उनका परिवार ही है। सच कहूं, तो मैं अपने मम्मी -पापा जैसी कंपैनियन शिप चाहता हूं।'

यंग मदर बनने के बहुत फायदे हैं: शुभांगी अत्रे

छोटे पर्दे पर अंगूरी भाभी बनकर हंसाने वाली शुभांगी अत्रे निजी जिंदगी में कई उतार-चढ़ावों से गुजरीं, मगर उन्होंने दर्शकों का मनोरंजन करना नहीं छोड़ा। दस सालों तक भाबी जी घर हैं, से जुड़ी रहने वाली शुभांगी की जगह आज भले शिल्पा शिंदे ने वापसी की है, मगर शुभांगी को कोई शिकवा नहीं है। वे इसी शो पर आधारित फिल्म भाबीजी घर पर हैं: फन ऑन द रन से चर्चा में हैं। उनसे एक खास बातचीत।

Rekha.Khan@timesofindia.com

मेरा वो क्रेजी फैन घर तक आ पहुंचा

सभी जानते हैं कि अंगूरी भाभी का बहुत बड़ा फैन बेस है। शुभांगी ने अपने फैंस के बारे में बताया, 'हमने इस फिल्म की शूटिंग देहरादून और मसूरी में की, तो ऋषिकेश पास में ही है। वहां गंगा घाट पर जो परमार्थ मंदिर है, हम जब उसके दर्शन करने गए, तो इतनी ज्यादा भीड़ इकट्ठी हो गई कि मैं क्या कहूं? उस वक्त मेरे फैन्स ने मुझ पर खूब प्यार लुटाया। यों तो मेरे कई क्रेजी फैन्स हैं, मगर एक फैन का मैं जरूर जिक्र करना चाहूंगी, जो घर तक आ गए थे। पहले तो मैं बहुत डर गई थी, मगर फिर समझ आया कि वो मेरे प्रशंसक हैं। हुआ ये कि वो मेरे लिए ढेर सारे गिफ्ट्स के साथ, प्रसाद और काला धागा लेकर आए। उन्होंने ये भी कहा कि मैम आपकी पर्सनल जिंदगी में पिछले कुछ सालों से कई उतार-चढ़ाव आए, मगर इसके बावजूद आप लोगों को हंसा रही थीं। उन्होंने मेरे लिए एक खत भी लिखा था। असल में वो समझ गए थे कि अपनी निजी जिंदगी में मैं कई चीजों से लड़ रही थी।

थिएटर में एक सीट दिवंगत पति के लिए रिजर्व रखूंगी

अपनी जिंदगी के सबसे मुश्किल दौर का जिक्र करते हुए वे कहती हैं, 'पिछले तीन -चार साल मेरे लिए काफी टफ रहे। वो जो सेपरेशन (पति से अलगाव) वाला समय था, वो बहुत मुश्किल था। पिछले साल जब पीयूष (उनके पति) चल बसे, तो वो मेरे लिए बहुत पीड़ादायक था। (कहते-कहते वे रो पड़ती हैं) मगर मुझे यकीन है कि वे मुझे और आशी (उनकी बेटी) को आशीर्वाद देते होंगे। मैं पीयूष को अपनी खुशनुमा यादों में रखना चाहती हूं। हाल ही में मैं भोपाल जाऊंगी अपने मम्मी-पापा के साथ फिल्म देखने, तो एक सीट पीयूष के लिए रिजर्व रखूंगी, क्योंकि मेरे दिवंगत पति ने एक्ट्रेस बनने में मुझे बहुत सपोर्ट किया। ये मेरा खुद से वादा है कि एक सीट उनके लिए मेरी बगल में जरूर होगी।'

मेरी बेटी मेरे लिए वरदान है

बीस साल की बेटी आशी के साथ अपनी बॉन्डिंग के बारे में वे कहती हैं, 'आज लगता है कि यंग मदर बनने के कई फायदे हैं। पहले लगता था कि ये मैं कितनी जल्दी मां बन गई, मगर अब भरपूर मजा इंजॉय करती हूं। काम करते -करते मुझे काफी चोटें लगती रहती हैं, तो मेरी बेटी कल ही मुझसे कह रही थी कि मम्मा आप अभी खुद ही टॉडलर हैं। इस बार जब यूएस जा रही थी अपनी पढ़ाई के लिए, तो उसकी एक ही फिक्र थी कि मैं अपना ध्यान रखूं। वो मुझे टिप्स देती रहती है कि मैं थोड़ा सोशलाइज करूं। सच कहूं, बेटियां वरदान होती हैं।'

दर्शक मेरी तरह शिल्पा को भी प्यार दें

तकरीबन दस साल बाद शो से अलग होना कितना मुश्किल था? इस पर वे बोलीं, 'मेरे लिए इमोशनल था बहुत, बिल्कुल भी आसान नहीं था। शुभांगी के शो से अलग होने के बाद शिल्पा शिंदे की सीरियल में वापसी हुई है। शुभांगी और शिल्पा के बीच लगातार कंपैरिजन हो रहा है। इस पर शुभांगी कहती हैं, 'इस शो जैसे आइकॉनिक शो बहुत कम बनते हैं। मैं तो दर्शकों से यही कहूंगी कि जितना प्यार आपने सीजन वन को दिया, टू को भी दें। किरदार कलाकार से बड़ा होता है। जब तक मैं थी, मैंने अपनी पूरी ईमानदारी और शिद्दत से इस किरदार को अदा किया है। मुझे इस शो के रूप में एक न्यू बॉर्न बेबी मिला था। उसे पाल-पोस कर मैंने दस साल का किया। मैं उसे शिल्पा को लौटा रही हूं। शिल्पा भी इसे उसी प्यार-दुलार से बड़ा करें। दर्शक भी उन्हें और पूरी टीम को प्यार दें।'

रवि किशन सभी की टांग खींचते थे

फिल्म में रवि किशन मूल शो की कास्ट से हट कर एक नए एडिशन के रूप में नजर आए। उनके साथ काम करने के अनुभव को लेकर उनका कहना है, 'रवि जी की सबसे अच्छी बात थी कि वो बहुत एफर्टलेस अभिनय करते हैं। बहुत सारे कलाकार मेथड एक्टिंग में बिलीव करते हैं, मगर रवि जी रिवर ऑन रिवर ऑफ अभिनेता हैं। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा। सेट पर वे मस्ती-मजाक का माहौल बनाए रखते थे। वे हम सभी की टांग खींचते थे। उनके साथ बहुत मजा आया। मैं आगे भी उनके साथ काम करना चाहूंगी।'

डॉन 3 के लिए मुझे नहीं किया गया अप्रोच: रितिक

रितिक रोशन को लेकर ऐसी चर्चाएं थीं कि डॉन 3 में रणवीर सिंह की जगह उनको कास्ट किया गया है। अब रितिक ने एक इंटरव्यू में कहा है कि उन्हें कभी भी डॉन 3 के लिए अप्रोच नहीं किया गया है।

रितिक ने इसके साथ ही सोशल मीडिया पर एक इमोशनल नोट साझा किया। रितिक ने कुछ फोटोज शेयर की हैं, जिसमें वह बर्फ से ढके पहाड़ों, शांत झील और नीले आसमान के नीचे नजर आ रहे हैं। इन तस्वीरों के साथ उन्होंने लिखा, 'यह बिल्कुल मेरे सिर के ऊपर और सामने है। मैं अपने सामने इन चीजों में खुद का ही अंश साफतौर पर देखता हूं। बदलाव आ रहा है, जिसका इंतजार लंबे समय से था।'

उन्होंने आगे लिखा, 'मैं आजाद हूं बिल्कुल प्रकृति की तरह। कुछ पल के लिए मैं इस दुनिया की अनमोल धरोहर के बीच आराम करता हूं।'

शेफाली शाह ने बयां किया प्यार का अर्थ

@shefalishahofficial

शेफाली शाह ने वैलेंटाइंस वीक के मौके पर प्यार के दर्द और उसकी गहराई को अपने शब्दों में बयां किया। शेफाली ने सोशल मीडिया पर एक लंबा नोट पोस्ट कर प्यार करने वालों को बहादुर कहा। उन्होंने लिखा, 'प्यार में पड़ने के लिए बहुत हिम्मत चाहिए।' उन्होंने न्यूटन, आर्मस्ट्रांग का उदाहरण देते हुए लिखा, 'प्यार इनकी खोजों की तरह है। एक ऐसी छलांग, जहां सुरक्षा की रस्सी आपके हाथ में नहीं होती, इसलिए इसे प्यार में गिरना कहते हैं। सच में प्यार में पड़ने के लिए बहुत बड़ा दिल चाहिए और बहुत ज्यादा नेकी की जरूरत होती है।'

CCI NG 3.7 Product: LucknowMasalamixBS PubDate: 15-02-2026 Zone: Lucknow Edition: 1 Page: LTMMP6 User: c-amul.rastogi@timesofindia.co Time: 02-14-2026 16:55 Color:

स्कूल टाइम

READER ENGAGEMENT INITIATIVE

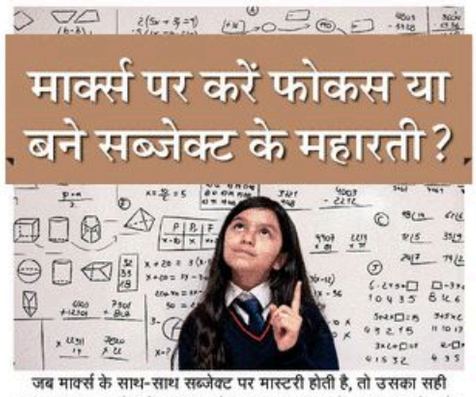

मार्क्स पर करें फोकस या बने सब्जेक्ट के महारती?

जब मार्क्स के साथ-साथ सब्जेक्ट पर मास्टरी होती है, तो उसका सही नतीजा निकलता है, और तभी एजुकेशन का असली उद्देश्य भी पूरा होता है।

Nishta Kochar
@timesofindia.com

पीढ़ियों से मार्क्स ही पढ़ाई में सफलता का पैमाना रहा है। रिपोर्ट कार्ड, परसेंटेज और रैंकिंग ने ही स्टूडेंट्स को मिलने वाले अवसर तय किए हैं, करियर के फैसलों को प्रभावित किया है और यह भी निर्धारित किया है कि स्टूडेंट खुद को कैसे देखते हैं। लेकिन जैसे-जैसे एजुकेशन तेजी से बदलती दुनिया की जरूरतों के अनुसार ढल रही है, एक बुनियादी सवाल उभर रहा है, क्या स्कूलों को सिर्फ अच्छे मार्क्स पाने वालों को ही पुरस्कृत करना चाहिए, या फिर सब्जेक्ट की गहरी समझ और उसके सही उपयोग जानी 'मास्टरी' को भी मान्यता देनी चाहिए?

हालांकि मार्क्स एक आसान और सुविधाजनक पैमाना हैं, लेकिन वे किसी स्टूडेंट की पूरी क्षमता को नहीं दर्शा पाते। आज अधिकतर एजुकेशनल्स्ट मास्टरी पर जोर देने की बात कर रहे हैं, क्योंकि वास्तविक सीख सिर्फ तथ्यों को याद करने में नहीं, बल्कि उन्हें समझकर जीवन में लागू करने में है।

जब आंकड़े कहें आधी कहानी

मार्क्स तुलना करने में सहायक होते हैं, लेकिन वे अक्सर स्टूडेंट्स को शॉर्टकट सीखने की आदत डाल देते हैं। कई बार स्टूडेंट किताब की परिभाषाएं तो याद कर लेते हैं, लेकिन उन्हें व्यवहारिक जीवन में लागू नहीं कर पाते। दूसरी ओर, कुछ स्टूडेंट जिज्ञासु, रचनात्मक और विश्लेषणात्मक होते हैं, लेकिन पारंपरिक परीक्षाओं में कम मार्क्स ला पाते हैं। यह अंतर दर्शाता है कि मार्क्स-केंद्रित प्रणाली की अपनी सीमाएं हैं।

शिक्षा विशेषज्ञ हेमंत सिंह कहते हैं, "मार्क्स किसी खास दिन का प्रदर्शन दिखाते हैं, जबकि मास्टरी जीवन भर चलने वाली सीख को दर्शाती है।" यह अंतर छोटा लग सकता है, लेकिन इसका असर बहुत गहरा होता है।

मास्टरी का असली अर्थ

मास्टरी सिर्फ जानकारी इकट्ठा करना नहीं है, बल्कि उसमें आलोचनात्मक सोच, समस्या सुलझाने की क्षमता और नए क्षेत्रों को तलाशने का आत्मविश्वास शामिल है। मास्टरी हासिल करने वाले स्टूडेंट सिर्फ परीक्षा के लिए नहीं, बल्कि जीवन के लिए तैयार होते हैं। आज के ज्ञान-आधारित समाज में नियोक्ता और विश्वविद्यालय ऐसे लोगों को प्राथमिकता देते हैं जो लचीले हों, टीम में काम कर सकें और नए विचारों के साथ आगे बढ़ सकें। ये गुण केवल स्टैंडर्ड टेस्ट से नहीं मापे जा सकते।

> **मार्क्स स्पष्टता और तुलना की सुविधा देते हैं, इसलिए मूल्यांकन और एडमिशन में उनका महत्व रहता है। लेकिन अक्सर वे स्टूडेंटों को अल्पकालिक रणनीतियों की ओर ले जाते हैं, जैसे रटकर याद करना, ताकि परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन किया जा सके, न कि लंबे समय तक टिकने वाली समझ विकसित हो सके।**

जो स्टूडेंट किसी विषय का 'क्यों' समझता है, वह उसे नए संदर्भों में बेहतर ढंग से लागू कर पाता है। मास्टरी पर आधारित क्लासेज में प्रोजेक्ट, ओपन डिस्कशन और इंटरडिसिप्लिनरी लर्निंग को महत्व दिया जाता है, जिससे स्टूडेंट सवाल पूछते हैं, प्रयोग करते हैं और गलतियों से सीखते हैं।

परफेक्शन का दबाव

मार्क्सों पर अत्यधिक जोर देने से तुलना और तनाव की संस्कृति बन जाती है। कई स्टूडेंट अपनी पहचान और आत्म-मूल्य को अपने स्कोर से जोड़ने लगते हैं। जब अपेक्षाएं पूरी नहीं होतीं, तो आत्मविश्वास कम हो जाता है। पैरेंट्स और टीचर्स अनजाने में इस सोच को और मजबूत कर देते हैं, जब वे सिर्फ अच्छे मार्क्सों की सराहना करते हैं, प्रयास और प्रगति को नजरअंदाज कर देते हैं।

स्कूल प्रिंसिपल त्रिशांका गुप्ता कहती हैं, "जब एजुकेशन सिर्फ मार्क्स की दौड़ बन जाती है, तो सबसे पहले जिज्ञासा खत्म होती है। असली उपलब्धि सीखने के प्रति प्रेम को बनाए रखना है।" मास्टरी पर ध्यान देने से यह संतुलन फिर से कायम हो सकता है।

मूल्यांकन की भूमिका पर पुनर्विचार

यह बहस मार्क्स को खत्म करने की नहीं, बल्कि उनकी भूमिका को बदलने की है। मूल्यांकन को अंतिम फैसला नहीं, बल्कि फीडबैक का जरिया होना चाहिए। कई संस्थान अब पोर्टफोलियो असेसमेंट, स्किल-बेस्ड ग्रेडिंग और कंटीन्युअस फीडबैक जैसे तरीकों को अपना रहे हैं। इससे स्टूडेंटों को लीडरशिप, क्रिएटिविटी और पैर्य जैसी खूबियों को भी पहचाना जा सकता है। ऐसे सिस्टम में स्टूडेंट चुनौतियों को खतरे की बजाय सीखने के अवसर के रूप में देखते हैं।

बदलाव के सूत्रधार हैं पैरेंट्स व टीचर

बच्चों को सवाल पूछने, अपनी रुचियों को अपनाने और असफलताओं से सीखने के लिए प्रेरित करना आंतरिक प्रेरणा को बढ़ाता है, जो किसी भी बाहरी इनाम से कहीं ज्यादा मजबूत होती है। टीचर्स जब रटने की बजाय समझ पर आधारित पढ़ाई कराते हैं, तो स्टूडेंट विषय से गहराई से जुड़ते हैं।

चाइल्ड साइकोलॉजिस्ट जैस्मिन सिंह कहती हैं, "जब स्टूडेंटों को उनके प्रयास और प्रगति के लिए सराहा जाता है, तब उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। सीखने को अगर एक यात्रा के रूप में देखा जाए, तो नतीजे अपने आप बेहतर होते हैं।"

अंततः एजुकेशन का लक्ष्य केवल अच्छे मार्क्स दिलाना नहीं, बल्कि ऐसे व्यक्ति को तैयार करना है जो सोच सके, समझ सके और बदलती दुनिया में खुद को ढाल सके। मार्क्स जरूरी हैं, लेकिन मास्टरी वह कुंजी है, जो वास्तविक और टिकाऊ सफलता की ओर ले जाती है।

NOTE : -

[: राजस्थान पत्रिका , दैनिक जागरण delhi, नवभारत टाइम्स delhi, अमर उजाला delhi, हिन्दुस्तान delhi, Pioneer hindi delhi, जनसत्ता delhi,]

English NEWSPAPERS
[Times Of India delhi, Indian Express delhi, The Hindu delhi, Financial Express delhi, economic times delhi , the Pioneer english delhi , the tribune delhi] ETC.

We are providing all news paper pdf hindi and English want to read daily newspapers by pdf please msg me on telegram

2. आकाशवाणी (AUDIO)

whatsapp Group ka link pane ke liye
Newspaper_pdf_bot par jaye.

Click here to contact:-https://t.me/Newspaper_pdf_bot
Or type in Search box of Telegram
@Newspaper_pdf_bot And you will find a channel
BACKUP GROUP LINK
https://t.me/joinchat/5P9EL1JaqoYzNTI1

Hindi-English News Paper
Website:- onlineftp.in